हिंदी वसंत पाठ - 16
कक्षा - छ.

प्र०1
उ० नगर से बाहर निकलकर दो पग चलने पर सीता जी के माथे पर पसीने की बूँदें छलक आईं और प्यास से होंठ सूख गए। वह थककर बेहाल हो गईं।

~~प्र०2~~
~~उ० श्री राम ने थकी हुई सीता को आराम करने के लिए कहा और उनके पैरों से काँटे निकाले।~~

प्र०2
उ० अब और कितनी दूर चलना है 'पर्णकुटी' कहाँ बनाएंगे, ये बात सीता जी ने राम से पूछी वन मार्ग पर चलते-2 सीता जी अत्यधिक थक गईं थी। इसलिए उन्होंने आराम करने की इच्छा से पूछा।

प्र०3
उ० श्रीराम ने थकी हुई सीता को आराम करने के लिये कहा और उनके पैरों से कांटे निकाले।

प्र०4
उ० कवि ने पहले सवैये में श्री राम लक्ष्मण और सीता जी के अयोध्या नगरी से वन मार्ग की ओर जाते समय मार्ग में होने वाली कठिनाइयों के बारे में बताया है। जबकि दूसरे दिन सवैये में तीनों के पारंपरिक स्नेह की भावना को बताया है।

प्र०5
उ० वन के मार्ग में पैदल चलना पड़ता है। वन का रास्ता ऊँचा-नीचा होता है। उस पर धूल, मिट्टी व धूप से मार्ग में चलना और भी कठिन हो जाता है।